लड़का जिसका नाम था आह्वान

अमरीका के मूल निवासियों के नायक

डॉ. कार्लोस मोंटेज़ूमा की सच्ची कहानी

प्रस्तुति व चित्रांकन: जीना कपाल्डी

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

उसे घर से अगुवा कर गुलाम की तरह बेचा गया, और वह एक अनजान संस्कृति में पला-बढ़ा। यह एक यावापाई (अमरीका के मूल निवासियों का एक कबीला) बच्चे की कहानी है जिसका नाम वसाजा था, जिसका मतलब आह्वान होता है। वसाजा पाँच बरस का था जब पीमा इन्डियनों ने (अमरीका के मूल निवासियों का एक और कबीला) उसे अगुवा कर लिया और तब एक गोरे को बेच दिया।

तीस साल बाद वसाजा नाम का यही बच्चा डॉ. कार्लोस मोंटूज़ूमा बन चुका था, अमरीका के मूल निवासियों के लिए किए गए जिनके काम ने उन्हें अपनी कौम का नायक बना दिया।

जीना कपाल्डी इस अद्भुत कहानी को खुद मोंटेज़ूमा के शब्दों में सुनाती हैं। क़िताब में शामिल उस समय ली गई तस्वीरें और लेखिका के बनाए चित्र, इतिहास को मूल निवासियों की नज़र से देखने का एक नवाचारी प्रयास हैं।

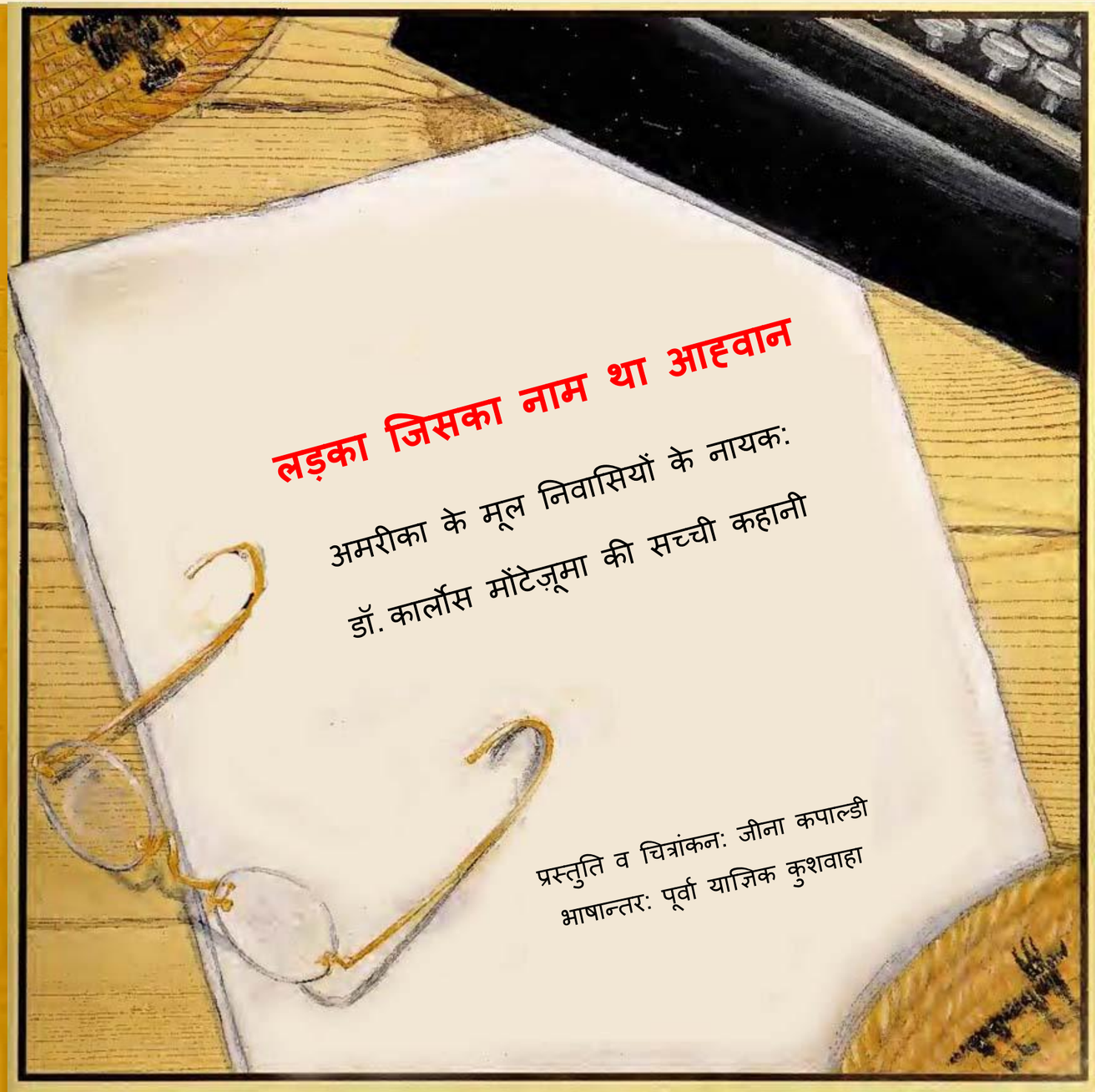
लड़का जिसका नाम था आह्टवान
अमरीका के मूल निवासियों के नायक:
डॉ. कार्लोस मौंटेज़ूमा की सच्ची कहानी
प्रस्तुति व चित्रांकन: जीना कपाल्डी
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

माँ और कोरी के लिए जो मेरी जानकारी में सबसे शानदार और जोशीली आत्माएं थीं।

सम्पादक जीन रैनल्स को आभार और श्रद्धा सहित...खास तौर से उनके मार्गदर्शन और दिशादृष्टि के लिए।

- जी.सी.

लेखिका की टिप्पणी

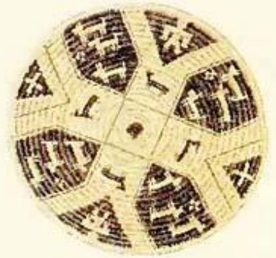

यह क़िताब एक अनूठे इन्सान के चरित्र, उनकी उदारता और मानवता की गवाही देती है - वे इन्सान थे डॉ. कार्लोस मोंटेज़ूमा।

अमरीका के इतिहास के उस दौर में जहाँ अमरीका के मूल-निवासियों (रेड इन्डियन) का कोई सम्मान नहीं करता था, वसाजा नाम के एक लड़के को उसके माता-पिता से जबरन छीन कर गुलामी में बेच दिया जाता है। तमाम अड़चनों व बाधाओं के बावजूद यह बालक बड़ा हो डॉ. कार्लोस मोंटेज़ूमा बनता है जो आगे चल कर एक चिकित्सक, व्याख्याता, प्रोफेसर, शोधकर्ता और प्रकाशक बने। पर उनकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका थी अमरीकी मूल-निवासियों के नागरिक अधिकारों के सक्रियकर्मी के रूप में। डॉ. मोंटेज़ूमा ने उन तौर-तरीकों को सुधारने का अथक प्रयास किया जो अमरीकी सरकार मूल-निवासियों के प्रति अपनाती थी। उन्होंने न केवल उनके मतदान के अधिकार के लिए, अपने पूर्वजों की भूमि पर उनके अधिकार के लिए संघर्ष किया, बल्की उनके सम्मान के लिए भी।

डॉ. मोंटेज़ूमा की यह कहानी उनके द्वारा 1905 में लिखे गए पाँच पन्नों के पत्र पर आधारित है, जो उन्होंने स्मिथसोनियन इन्स्टिट्यूट के प्रोफेसर होम्स को लिखा था। प्रोफेसर होम्स ने अमरीका के मूल-निवासियों पर लिखी जा रही अपनी पुस्तक के लिए डॉ. मोंटेज़ूमा से उनके जीवन पर सामग्री चाही थी।

डॉ. मोंटेज़ूमा ने बाद में दिए गए कई साक्षात्कारों, अख़बारों व पत्रिकाओं में छपे आलेखों, उनके भाषणों और पत्रों द्वारा अपने जीवन का अधिक विस्तृत वर्णन किया था। यह सारी सामग्री कई संग्रहालयों के किताबघरों में सुरक्षित हैं। ये दस्तावेज़ डॉ. मोंटेज़ूमा के शब्दों का स्त्रोत बने। मैंने उनके शब्दों को डॉ. मोंटेज़ूमा के शब्दों के साथ बुना ताकि उनके जीवन को अधिक समग्रता से पेश कर सकूँ। मैंने मूल स्त्रोतों को पूरी सच्चाई व ईमानदारी के साथ पेश करने की हर चन्द कोशिश की है। अपनी तरफ से केवल वे वाक्यांश ही जोड़े हैं जिनसे पाठ की सहजता और रवानगी बनी रहे।

- जी. सी.

यावापाई परिवार की कुटिया।

यावापाई इन्डियन मध्य व पश्चिमी एरिज़ोना में सदियों से रहते रहे हैं। किसी समय वे वहाँ के दक्षिण-पश्चिमी रेगिस्तानी इलाके में घूमा करते थे। यावापाई पुरुष शिकारी और भोजन एकत्रित करने वाले थे और उनकी स्त्रियाँ सुन्दर व जटिल बुनी हुई टोकरियों के लिए जानी जाती थीं। यह चित्र 1880 में एक यावापाई परिवार को दिखाता है।

जब डॉ. मोंटेज़ूमा ने प्रोफेसर होम्स को कोजो पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने कहा था कि वे अपाची कबीले के हैं। पर सालों बाद उन्होंने जाना कि वे दरअसल यावापाई कबीले के हैं। बालक वसाजा उसी यावापाई कबीले का सीधा वंशज था, जो अब अपने पूर्वजों की जन्मभूमि में, फोर्ट मैकडावल स्थित यावापाई नेशन, एरिज़ोना, में रहते हैं।

7 अक्तूबर, 1905

प्रोफेसर एच.डब्ल्यू. होम्स, स्मिथसोनियन इंस्टिट्यूट

वॉशिंगटन डी.सी.

प्रिय मित्र,

मैं जानता हूँ कि आप मेरे बारे में और मेरी कौम के लोगों के साथ जो कुछ हुआ उस बारे में जानकारियाँ इकट्ठा कर रहे हैं। इसलिए मैं बखुशी आपके सवालों का जवाब दूँगा। मुझे उम्मीद है कि जो कुछ मैं लिखूंगा वह सब ज्ञान में, मेरे लोगों को स्वीकारने में, उन्हें समझने में, योगदान दे सकेगा।

मैं एक शुद्ध अमरीकी इन्डियन हूँ, जिसका जन्म 1866 में एरिज़ोना के फिश कैनयन क्रीक में हुआ था।

मुझे वसाजा नाम से बुलाया जाता था, जिसका मतलब 'आह्वान' होता है। मेरे समूह में तकरीबन एक सौ पचास लोग थे। हम लाल धरती वाले पठारों में घूमा करते थे। हम भोजन तलाशते थे और घास से बनी छोटी कुटियाओं में रहते थे, जिन्हें 'आ-वाह' कहा जाता था।

मेरे दादा के समय में हमारी ज़िन्दगी सुरक्षित और सरल थी। पर मुझ तक आते-आते हमारी ज़िन्दगी मारक और ख़तरनाक बन गई थी...क्योंकि अब तक हमारे कई दुश्मन बन चुके थे।

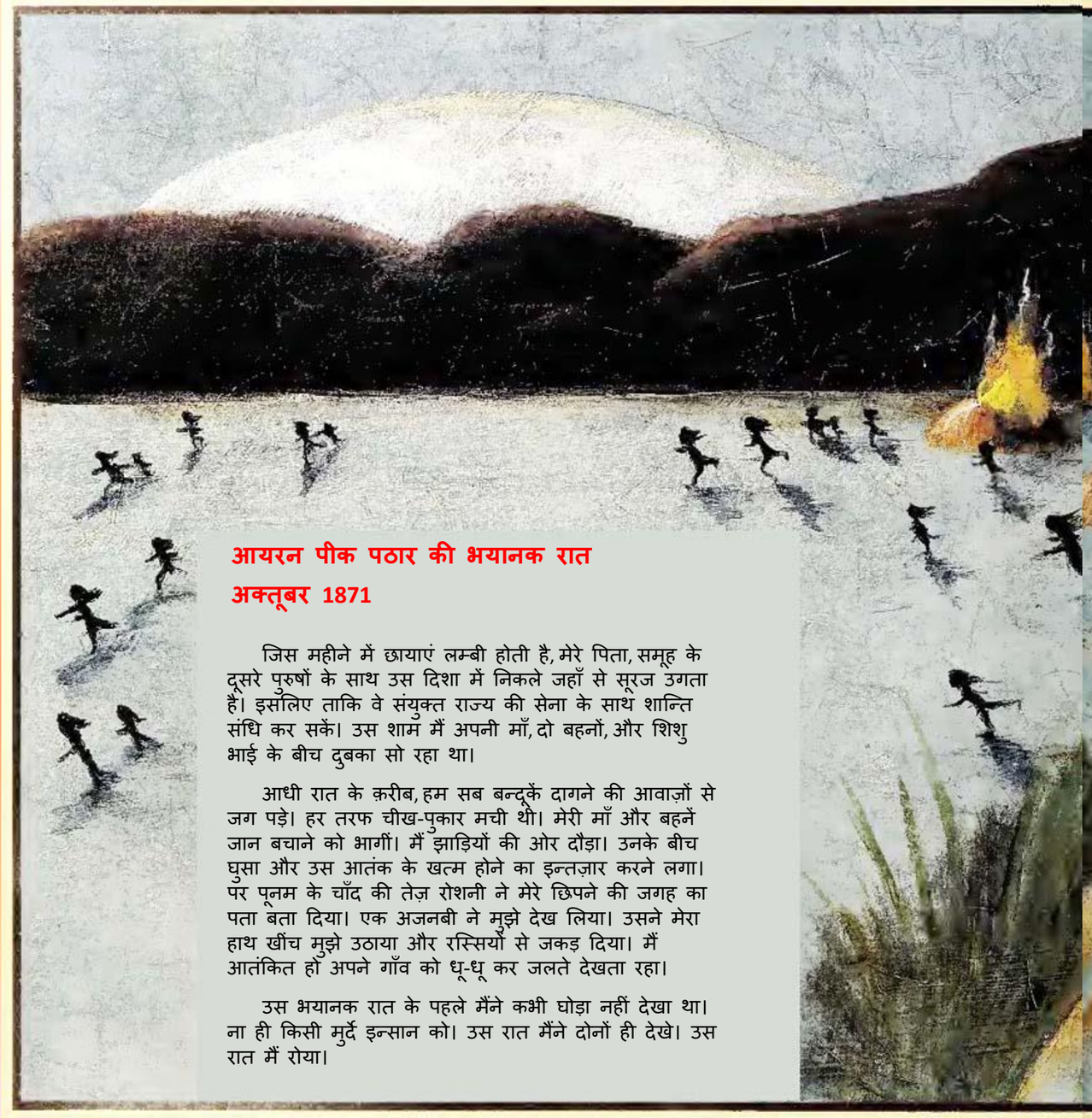

आयरन पीक पठार की भयानक रात

अक्तूबर 1871

जिस महीने में छायाएं लम्बी होती है, मेरे पिता, समूह के दूसरे पुरुषों के साथ उस दिशा में निकले जहाँ से सूरज उगता है। इसलिए ताकि वे संयुक्त राज्य की सेना के साथ शान्ति संधि कर सकें। उस शाम मैं अपनी माँ, दो बहनों, और शिशु भाई के बीच दुबका सो रहा था।

आधी रात के क़रीब, हम सब बन्दूकें दागने की आवाज़ों से जग पड़े। हर तरफ चीख-पुकार मची थी। मेरी माँ और बहनें जान बचाने को भागीं। मैं झाड़ियों की ओर दौड़ा। उनके बीच घुसा और उस आतंक के खत्म होने का इन्तज़ार करने लगा। पर पूनम के चाँद की तेज़ रोशनी ने मेरे छिपने की जगह का पता बता दिया। एक अजनबी ने मुझे देख लिया। उसने मेरा हाथ खींच मुझे उठाया और रस्सियों से जकड़ दिया। मैं आतंकित हो अपने गाँव को धू-धू कर जलते देखता रहा।

उस भयानक रात के पहले मैंने कभी घोड़ा नहीं देखा था। ना ही किसी मुर्दे इन्सान को। उस रात मैंने दोनों ही देखे। उस रात मैं रोया।

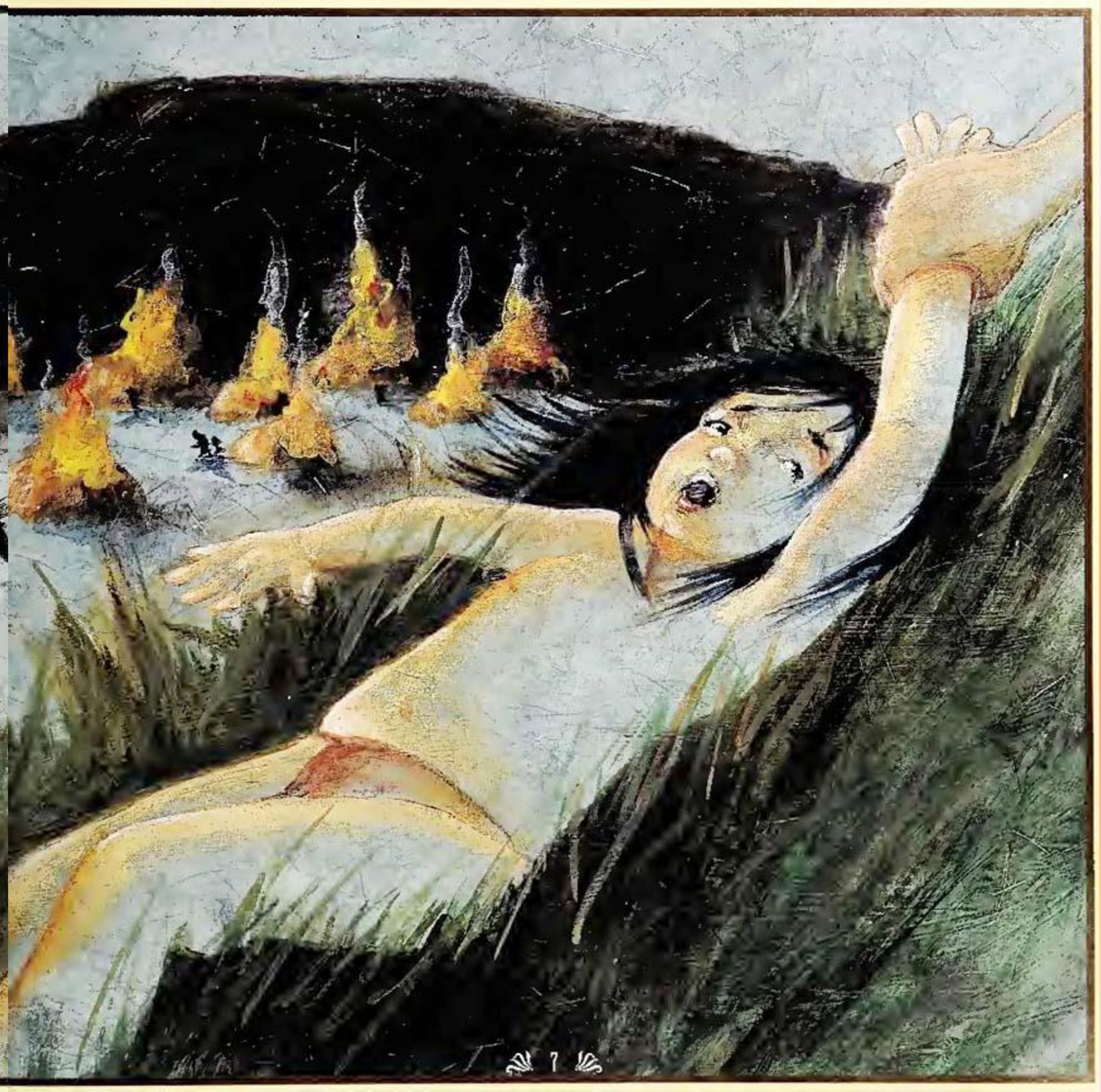

पीमा महिला

गोरे लोगों के आने के पहले से ही पीमा और यावापाई कबीले एक-दूसरे के दुश्मन थे। संयुक्त राज्य की सेना पीमा लोगों को यावापाई कबीले पर हमला करने से रोकने के लिए कुछ नहीं करती थी। सच तो यह था कि सेना उन कबीलों को तलाशने के लिए पीमा पुरुषों का इस्तेमाल करती थी, जिन्होंने शान्ति संधि पर दस्तख़त नहीं किए थे। और जो अपनी जन्मभूमि को छोड़ 'रिजर्वेशन' यानी उनके लिए आरक्षित जगह रहने नहीं चले गए थे।

गर्म रेगिस्तान का सफ़र
अक्तूबर 1871

मैंने जाना कि मुझे अगुवा करने वाले पीमा थे। मेरे कबीले के पुराने दुश्मन। एक पीमा योद्धा ने मुझे घोड़े पर बिठाया और हम दो दिनों तक एरिज़ोना के तपते रेगिस्तान का सफ़र करते रहे। जब हम उनके गाँव पहुँचे मुझे खाने के लिए कद्दू, मकई और घोड़े का माँस दिया गया। मैं यह सब खा ही नहीं पाया। शायद इसलिए कि यह सब मैंने पहले कभी खाया ही नहीं था, या फिर इसलिए कि मैं बेहद डरा-सहमा था।

उस गाँव में तकरीबन चार सौ मर्द, औरतें और बच्चे थे। मुझे डर था कि वे मुझे मार डालेंगे, इसलिए मैंने तय किया कि मैं वह सब करूंगा, जो वे मुझे करने को कहें, ताकि वे खुश रहें। इस दौरान पीमा लोगों ने मेरे साथ दयालु बरताव किया।

पकड़े जाने के तीसरे दिन मैंने कई पीमा लोगों को मेरी तरफ इशारा करते देखा। कुछ हंस रहे थे, कुछ जब मेरी नज़र उनसे मिलती उदास दिख रहे थे। मुझे धर-पकड़ के लाने वालों ने अपना चेहरा रंगा और अपना युद्ध नाच शुरू किया। पूरा गाँव मेरे गिर्द नाच रहा था। पुरुष अपनी बर्छियों और गदाओं से मुझे चौंका रहे थे। स्त्रियाँ मुझ पर गंदे चीथड़े फेंक रही थीं। और बच्चे थूक रहे थे। एक दुश्मन कैदी बड़ी उपलब्धि जो थी, फिर चाहे वह एक सिसकता बच्चा ही क्यों न हो।

जिन लोगों को मैं जानता था, जिन्हें प्यार करता था सब बिछुड़ चुके थे। पीमा लोगों ने मुझे एक नया नाम दिया - 'हेजलवाईकान' यानी 'वह जिसे अकेला छोड़ दिया गया हो'।

कोठार घर
मध्य नवम्बर 1871

पीमा लोगों के साथ सप्ताह गुज़ारने के बाद मुझे गुलाम की तरह बेचने को ले जाया गया। हम एक घर में रुके जहाँ मुझे अंधेरे कोठार में रख गया। वहाँ मेरी ही आकार का एक लड़का था। उसकी आँखें मुझ पर से हट ही नहीं रही थीं। मैंने अपना पैर लात मारने को उठाया, उसने भी यही किया। जब मैंने बाज़ू उठाई, उसने भी वही किया। मैंने अपना सिर मोड़ा, पर उसकी आँखें मुझ पर टिकी रहीं। मैंने मुँह बिचकाया, उसने मेरी नकल की। मैं उस लड़के से बहुत नाराज़ हो गया। मैं उससे लड़ने की तैयारी में उछला। पर वह ठीक उसी पल गायब हो गया।

सालों बाद मुझे पता चला कि जो लड़का हू-ब-हू मेरी नकल कर रहा था, वह दरअसल आईने में मेरा ही प्रतिबिम्ब था!

वसाजा अपाची पोशाक में

यह चित्र पीमा लोगों द्वारा वसाजा को बन्दी बनाने के साल भर बाद का है। बेशक वसाजा ने जब इस पोशाक में अपनी तस्वीर खिंचवाई वह खुद को अपाची मानता था।

कार्लो जैन्टाइल

कार्लोस मोंटेज़ूमा (वसाजा) के दत्तक पिता कार्लो जैन्टाइल थे। इस क़िताब की कई तस्वीरें उनके द्वारा खींची गई हैं।

वसाजा को कैद करने वाला पीमा

इस तस्वीर के पुरुष को वसाजा को बन्दी बनाने वालों में से एक माना जाता है। उसने जो कोट पहन रखा है, वह वसाजा को बेचने से मिले पैसों से ख़रीदा गया था। अफ्रीकी-अमरीकियों की गुलामी तो गृह युद्ध के बात ख़त्म कर दी गई थी। पर अमरीका के मूल-निवासियों को गुलाम बनाना जारी था। मैक्सीकी-अमरीकी और एंग्लो-अमरीकी, दोनों ही मूल निवासियों को गुलाम बना उनसे खानों में मशक्कत करवाते थे, या फिर उन्हें जबरन घरेलू सेवा में धकेलते थे। इन गुलामों में कई मूल-निवासी उनके कबीलों पर हुए हमलों के दौरान अगुवा किए गए थे।

सौदा

मध्य नवम्बर 1871

पीमा लोग मेरा सौदा एक घोड़े के बदले करना चाहते थे। पर वे इसमें कामयाब नहीं हो सके। मुझे पूरे कस्बे में तब तक इधर से उधर घसीटा गया, जब तक उनकी मुलाक़ात मिस्टर कार्लो जैन्टाइल से न हो गई।

हालाँकि मुझे यह कतई समझ न आया कि दोनों आदमियों ने एक-दूसरे से क्या कहा, पर इतना तो समझ आ ही गया कि मिस्टर जैन्टाइल के शब्दों की ध्वनियाँ कुछ अलग सुनाई दे रहीं थीं। यह तो मुझे बाद में पता चला कि वे विशाल एटलांटिक महासागर को पार कर रोमांच, कला व सोने की तलाश में इटली से अमरीका आए थे।

मिस्टर जैन्टाइल अपने साथ एक लकड़ी का छोटा सा बक्सा रखते थे, जो लोगों की आँखों में रोशनी चमकाता था। पहले मुझे लगा कि वह बक्सा बन्दूक है। मैं उससे डरा करता था, जब तक मुझे उसके जादू का पता न चला। वह बक्सा किसी भी आदमी का चेहरा उसे कोई चोट पहुँचाए बिना उतार लेता था और उसे एक सफेद पत्ते पर छाप देता था। वे इस बक्से को कैमरा कहते थे।

मिस्टर जैन्टाइल को एक छोटे-से गंदे लड़के की कोई ज़रूरत नहीं थी। फिर भी उन्होंने मुझे और मेरी ज़िन्दगी को चाँदी के तीस डॉलर दे ख़रीद ली। मुझे धर-पकड़ने वालों में से एक ने उस पैसे से एक कोट ख़रीदा। मिस्टर जैन्टाइल ने उसकी एक तस्वीर खींची।

छोटी-सी दिलासा

मध्य नवम्बर 1871

मेरे नए अभिभावक के रूप में मिस्टर जैन्टाइल के सामने पहली चुनौती थी मुझे खाना खिलाना। मैंने माँस का एक टुकड़ा उठाया, पर उसे फ़ौरन ही छोड़ दिया क्योंकि उसमें प्याज़ की महक थी। तब मुझे राजमा दिया गया, मैंने उसके कुछ दाने कुतरे, तब अपना हाथ कटोरे में डाला और मुट्ठी भर राजमा मुँह में डाल लिया। खाना खत्म होने तक मैं सिर से पावँ तक राजमा में लिपटा था।

अगले दिन मिस्टर जैन्टाइल ने कस्बे के कुएं पर ले जाकर मुझे नहलाया। उन्होंने तब मेरे लम्बे बाल काटे, मुझे जूते, मोज़े और कमीज़, पतलून पहना दिए। मैं 'सभ्य' बनाया जा रहा था।

मैं पूरे वक़्त रोता रहता था। मिस्टर जैन्टाइल मुझे दिलासा देने की कोशिश करते। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पता चला जिसके पास दो इन्डियन लड़कियाँ थीं। उन्होंने सोचा कि शायद उनसे मिलने से मुझे मदद मिले।

हमने घोड़ा-गाड़ी से पचास मील का सफ़र तय किया। वे दोनों लड़कियाँ एक खेत पर बने हुए सफेद मकान के सामने खड़ी थीं। उन्होंने रंगीन पोशाकें पहन रखी थीं। मैंने उन्हें पहचाना ही नहीं। पर उनमें से एक ने मेरा नाम पुकारा, "वसाजा!"

ये तो मेरी दो बहनें ही थीं। मैं वह दिन कभी नहीं भूलूंगा। हमने एक-दूसरे के हाथ थामे और उन सारी अच्छी चीज़ों की बात की जो हमें मिली थीं। पर हमारे माता-पिता की याद, और हमेशा के लिए बन्दी होने के खयाल ने हमें कुचल ही दिया।

मिस्टर जैन्टाइल ने हम तीनों का एक फोटो खींचा।

दो-तीन मुलाकातों के बाद हम मेरी बहनों को पीछे छोड़ किसी दूसरी जगह के लिए निकल पड़े। मैं उनसे फिर कभी नहीं मिल सका।

वसाजा और उसकी दो बहनें

यह तस्वीर वसाजा को अगुवा करने के कुछ सप्ताहों बाद की है। इसमें वसाजा अपनी बहनों - काउ-वावसे-पुचिया और बड़ी बहन हो-लोक-का के साथ है।

अब जो मेरा नाम है

मध्य नवम्बर 1871

मैं अंग्रेजी बोल नहीं सकता था, और मिस्टर जैन्टाइल को मेरी ज़ुबान नहीं आती थी। पर जल्द ही मुझे इतना तो समझ आ ही गया कि मैं अपने नए पिता के साथ बिलकुल महफ़ूज़ हूँ। मुझे पता लग गया कि मेरे साथ गुलामों-सा सुलूक नहीं किया जाएगा।

मिस्टर जैन्टाइल धार्मिक इन्सान थे। उनका बेटा होने के नाते मेरा भी बप्तिस्मा किया गया। और मेरी नई ज़िन्दगी के लिए एक नया नाम भी दिया गया। मेरा पहला नाम कार्लोस मिस्टर जैन्टाइल के नाम से लिया गया था। और दूसरा मोंटेज़ूमा, मेरे बचपन के घर के पास के खंडहरों के नाम पर था। पर मैं अपने असली नाम 'वसाजा' को कभी नहीं भूलूंगा। जिसका मतलब 'आह्वान' होता है, और वयस्क होने पर भी मुझ पर फबता है।

मोंटेज़ूमा के खंडहर

अमरीका आकर बस जाने वाले एंग्लो-अमरीकी लोग एक समय यह मानते थे कि ये खंडहर एज़टैक सम्राट माक्टेज़मा, (जिन्हें मोंटेज़ूमा भी कहा जाता था) के महल हैं। पर असल में ये खंडहर बारहवीं शताब्दी में सिनागुआ कबीले के लोगों द्वारा बनाए गए रिहायशी आवास हैं।

मोंटेज़ूमा का सभागार

कार्लो जैन्टाइल अपनी यात्रा करते समय तमाम तस्वीरें खींचा करते थे। माना जाता है कि इस तस्वीर में बीच में जो बच्चा टोप पहले दिखाई दे रहा है, वह कार्लोस मोंटेज़ूमा है।

लोहे के घोड़े

1871 का शेष और 1872 की शुरुआत

मिस्टर जैन्टाइल का घुमक्कड़ दिल लगातार सफ़र करने के लिए नई जगहें तलाशता रहता था। वे एक लोहे के घोड़े की बात करते थे, जो हमें हमारी किसी भी मनचाही जगह पर ले जा सकता था। हम एक प्लैटफॉर्म पर खड़े लोहे के घोड़े के आने का इन्तज़ार कर रहे थे। और भी कई लोग इन्तज़ार कर रहे थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि हम सब एक घोड़े की पीठ पर कैसे बैठ सकेंगे।

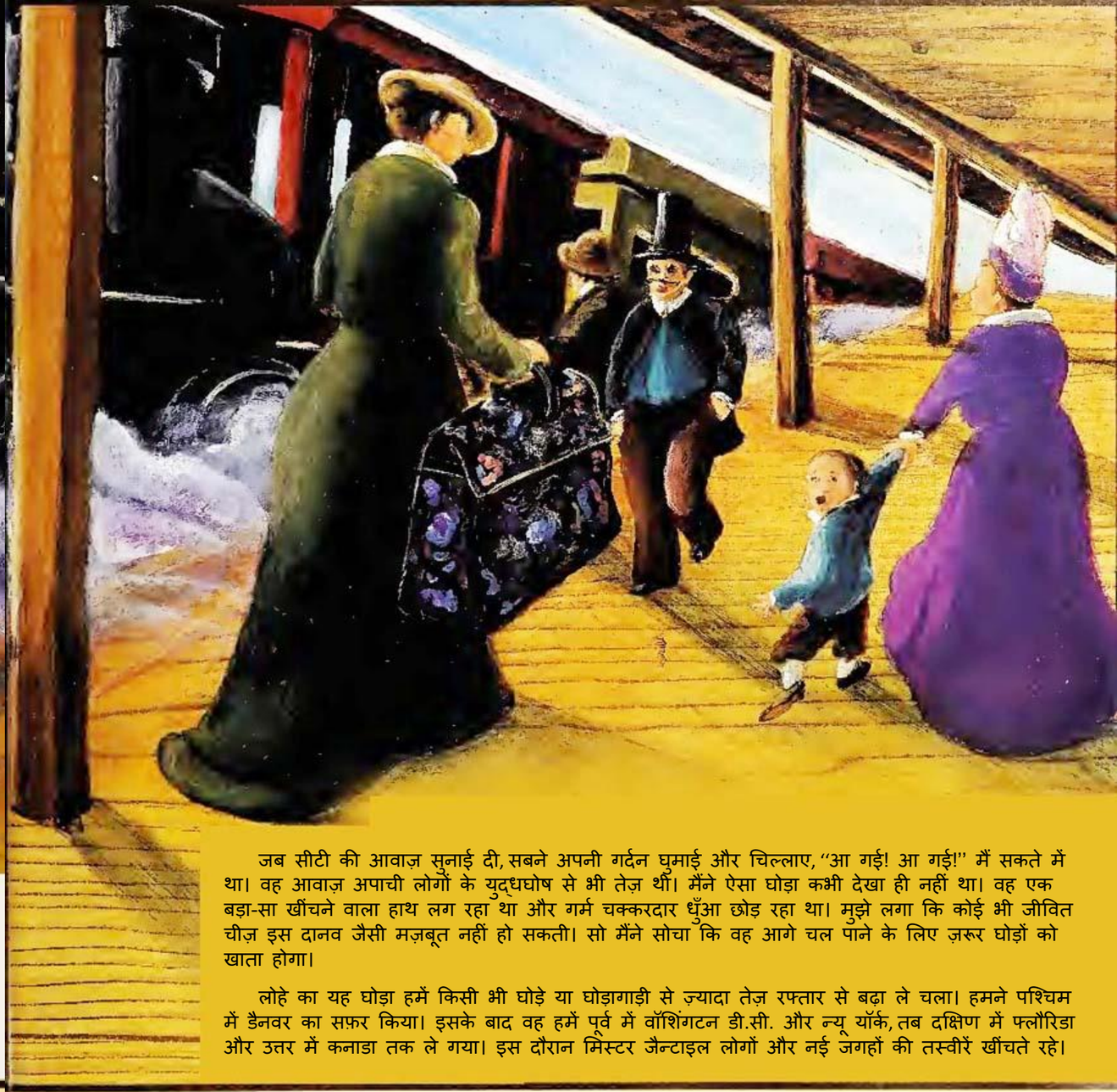

जब सीटी की आवाज़ सुनाई दी, सबने अपनी गर्दन घुमाई और चिल्लाए, "आ गई! आ गई!" मैं सकते में था। वह आवाज़ अपाची लोगों के युद्धघोष से भी तेज़ थी। मैंने ऐसा घोड़ा कभी देखा ही नहीं था। वह एक बड़ा-सा खींचने वाला हाथ लग रहा था और गर्म चक्करदार धुँआ छोड़ रहा था। मुझे लगा कि कोई भी जीवित चीज़ इस दानव जैसी मज़बूत नहीं हो सकती। सो मैंने सोचा कि वह आगे चल पाने के लिए ज़रूर घोड़ों को खाता होगा।

लोहे का यह घोड़ा हमें किसी भी घोड़े या घोड़ागाड़ी से ज़्यादा तेज़ रफ्तार से बढ़ा ले चला। हमने पश्चिम में डैनवर का सफ़र किया। इसके बाद वह हमें पूर्व में वॉशिंगटन डी.सी. और न्यू यॉर्क, तब दक्षिण में फ्लोरिडा और उत्तर में कनाडा तक ले गया। इस दौरान मिस्टर जैन्टाइल लोगों और नई जगहों की तस्वीरें खींचते रहे।

बफ़लो बिल (बाएं से दूसरे) टैक्सास जैक (दाहिने) यह तस्वीर नाटक द स्काउट्स ऑफ पैरेरी एण्ड रेड डेविलरी एज़ इट इज़ के अभिनेताओं की है।

कार्लोस मौंटेज़ूमा अभिनेता एलैसान्द्रो साल्वीनी के साथ एलैसान्द्रो साल्वीनी एक अभिनेता थे और कार्लो जैन्टाइल के मित्र भी। ज़्यादातर अमरीकी मूल-निवासी बच्चों के बाल काट-छांट दिए गए थे ताकि उनका अमरीकीकरण हो जाए और वे एंग्लो-अमरीकी समाज के तौर-तरीके स्वीकारें। पर अमरीका के मूल निवासियों के लिए बाल काटने का एक आध्यात्मिक अर्थ होता था, जैसे किसी प्रियजन की मौत का शोक मनाना। पर जैन्टाइल बीच-बीच में कार्लोस को अपने बाल लम्बे करने देते थे।

अब क्योंकि आस-पास मैं ही अकेला ही अमरीकी मूल-निवासी था, मुझे नाटक में एक अपाची बन्दी, कोचीसे बालक एज़टैका के किरदार के लिए नाटक से जोड़ा लिया गया। मेरा काम था दर्शकों के बीच से दौड़ते हुए एक दूसरे अभिनेता को अपने तीर-कमान और चीख-पुकार से डराना-धमकाना।

मेरा प्रदर्शन दर्शकों को पसन्द आया। नाटक को देखने आने वालों की भीड़ इतनी होती कि ऑपेरा हाउस में सिर्फ खड़े रहने भर की जगह रहती!

मिस्टर जैन्टाइल को लोगों की यादगारी तस्वीरें खींचने का काम मिला। हमने तीन सप्ताह वहीं गुज़ारे, जिसके बाद हम मशहूर अभिनेताओं को पीछे छोड़ आगे बढ़ चले। मिस्टर जैन्टाइल को भरोसा था कि नए रोमांच हमारा इन्तज़ार कर रहे हैं।

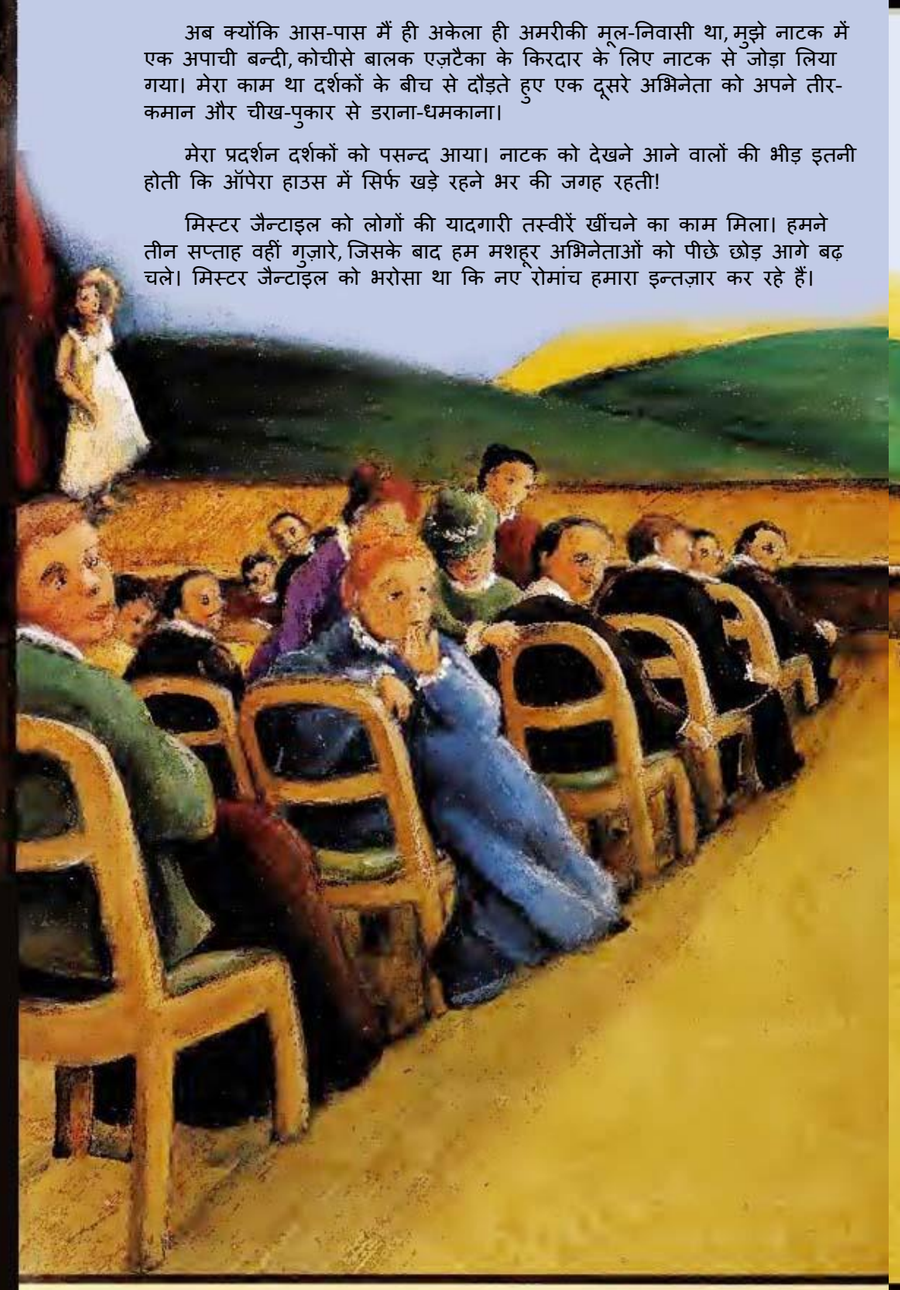

परिस्थितियों और किस्मत ने मुझे पूर्व की सभ्यता में ला खड़ा किया। मैं अपने नए पिता के साथ सहज हो चुका था। एक मायने में हम दोनों ही इस देश में अजनबी थे।

मिस्टर जैन्टाइल को अहसास हुआ कि लगातार सफ़र करना मेरे लिए मुश्किल था। सो लगभग साल भर तक इधर-उधर घूमने के बाद, हम शिकागो में बस गए। वहीं मेरा दाख़िला पहले सार्वजनिक स्कूल में हुआ।

बीच-बीच में मुझे मिस्टर जैन्टाइल अपने दोस्तों के पास छोड़ कर अपना सफ़र जारी रखते थे।

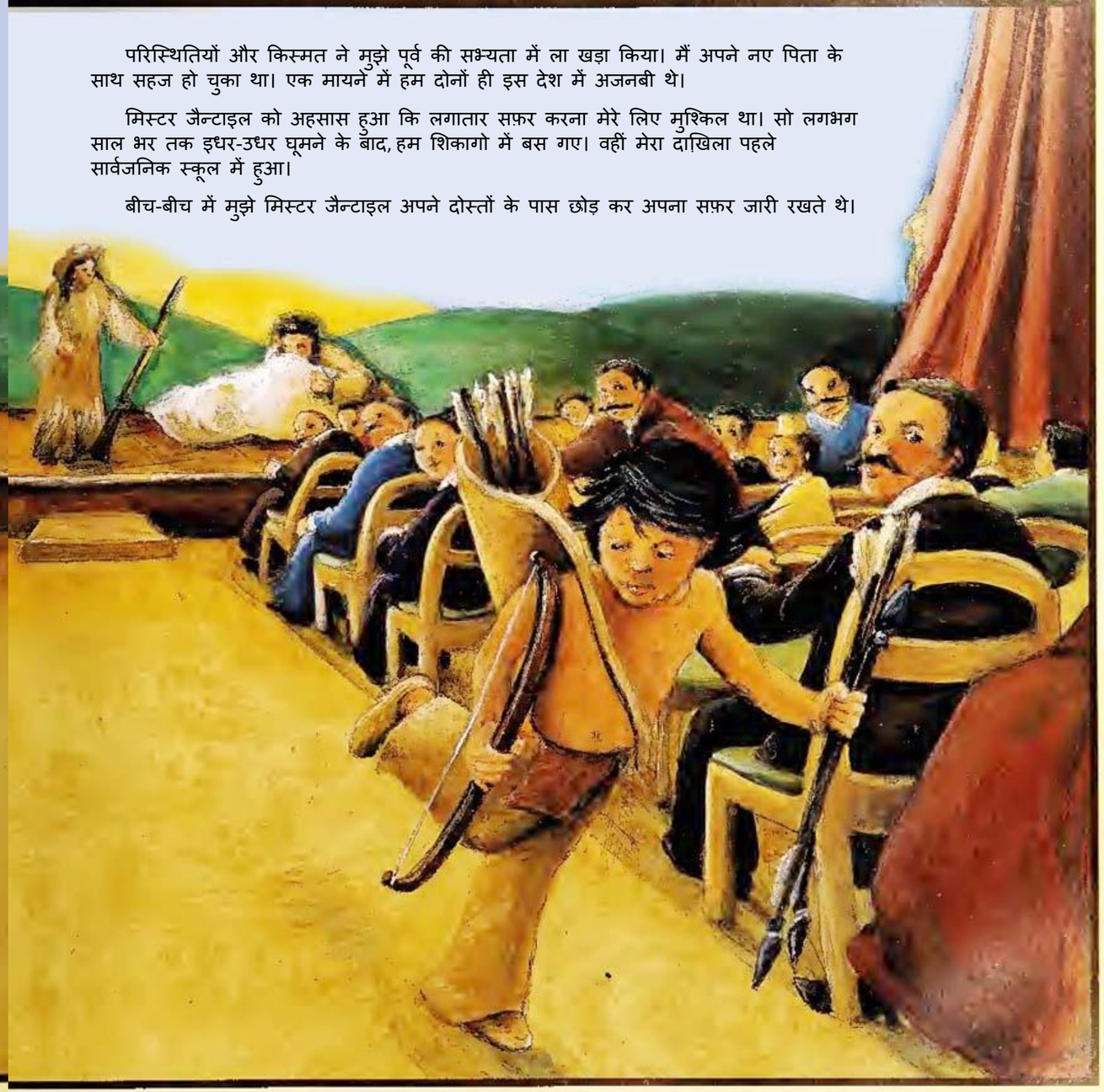

आख़िर वे पेशेवर फोटोग्राफर थे, उन्हें लगातार ऐसी तस्वीरें खींचनी पड़ती थीं जो उनके स्टूडियो में बिक सकें। पर उनके दोस्त रहमदिल थे और मेरी अच्छी देखभाल करते थे।

अब मेरे भी कुछ दोस्त बने। मैंने अपने लिए अख़बार डालने वाले लड़के का काम तलाश लिया था। सो हर इतवार की सुबह मुझे दो अख़बार छांटने और बांटने होते थे - द टाइम्स् और द ट्रिब्यून। क्योंकि मैं ठीक से पढ़ नहीं सकता था मुझे दोनों अख़बारों में फर्क करना आता ही नहीं था। मेरे नए दोस्त इस काम में मेरी मदद करते।

अपने सुबह का काम पूरा कर मैं अपने दोस्तों के साथ संडे स्कूल जाता था। मुझे पादरी का उपदेश तो समझ नहीं आता था क्योंकि मैंने अब तक भी गोरों की ज़बान पर महारत हासिल नहीं की थी, पर गिरजे का संगीत मेरे दिल को छूता था। मैं वह सुनने के लिए हर इतवार का इन्तज़ार किया करता था।

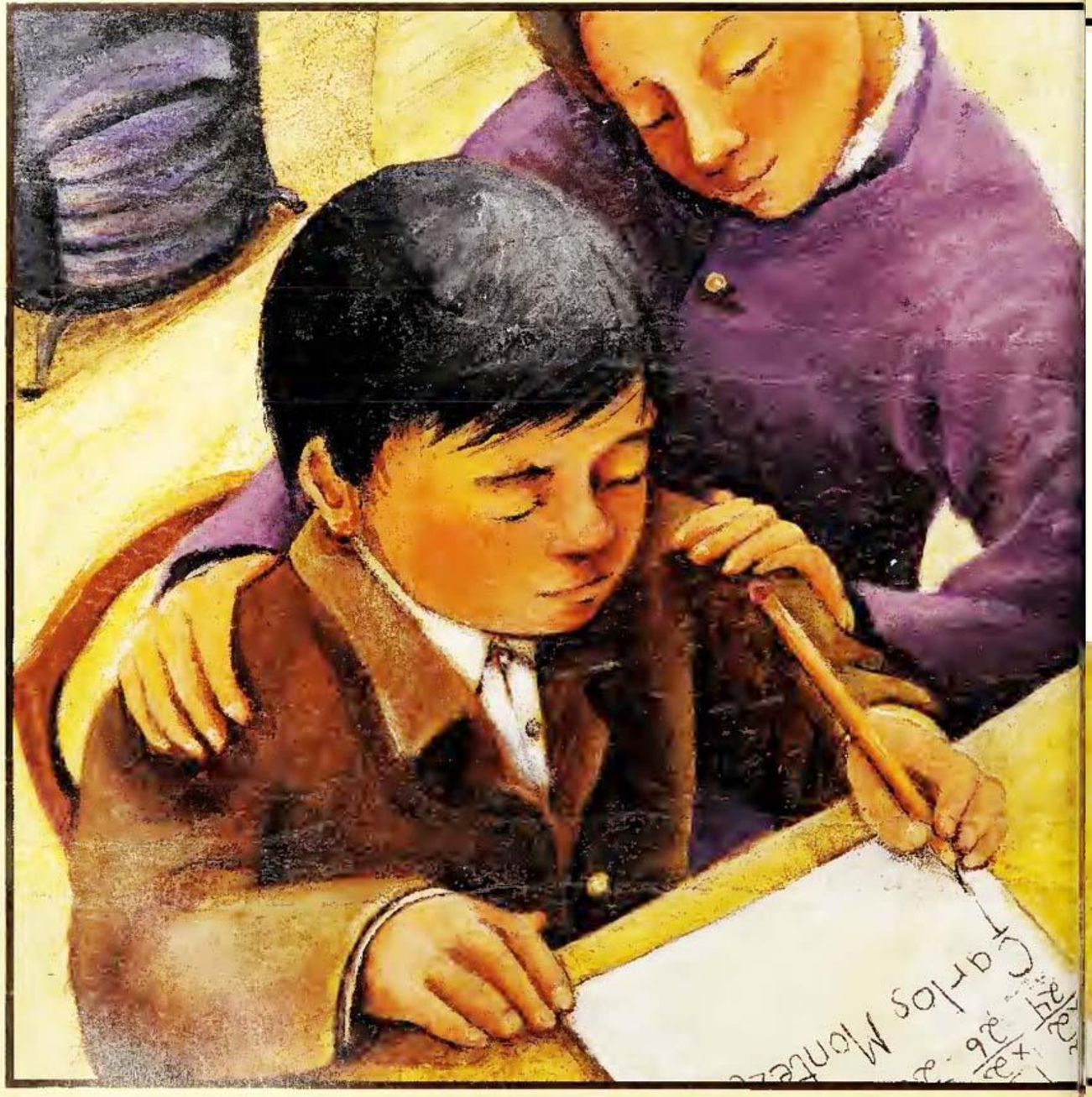

पादरी का परिवार

1875 से 1889 तक

जब मैं ग्यारह साल का हुआ मिस्टर जैन्टाइल का स्टूडियो जल कर राख हो गया। उनकी माली हालत ख़स्ता हो गई। मजबूर हो उन्हें मुझे एक पादरी के घर छोड़ना पड़ा ताकि वे फिर से अपने कारोबार को गढ़ सकें। मैं पादरी साहब के बच्चों के साथ काम करता। हम गर्मियों में खेत जोतते और सर्दियों के काम स्कूल के पहले और उसके बाद किया करते। ख़ाली वक़्त बहुत ही कम होता था। पर मेरे साथ परिवार में अच्छा सुलूक किया जाता था।

मिस्टर जैन्टाइल मुझे अक्सर ख़त लिखते। मेरे स्वास्थ्य की फिक्र करने के साथ वे मेरी पढ़ाई-लिखाई की चिन्ता भी करते। उन्हें मुझ पर बड़ा फ़क्र था, कुछ लोग तो कहेंगे कि वे मुझे अपने लाड-प्यार से बिगाड़ते थे। किसी भी पिता की तरह वे मेरे लिए बड़े-बड़े सपने देखा करते थे। मेरे शिक्षक भी मुझमें खास रुचि लेते थे। मैं जल्दी सीखता था और कड़ी मेहनत भी करता था। मेरे शिक्षक मेरी प्रगति से खुश थे। जब तक मैं चौदह साल का हुआ मैं हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर चुका था। इलिनाई विश्वविद्यालय में मेरा दाख़िला हो गया। मेरा मुख्य विषय रसायनशास्त्र था। मैंने अच्छा प्रदर्शन किया और सतरह वर्ष की उम्र में स्नातक बन गया। और तब मुझे शिकागो मेडिकल कॉलेज में स्वीकार कर लिया गया।

हालांकि पढ़ाई का खर्च छात्रवृत्ति से निकल रहा था, मुझे ज़िन्दा रहने के लिए पैसों की दरकार थी। सो मैंने गरम खाने और रात को सो पाने के बदले फ़र्श और खिड़कियों को धोने-पोंछने के काम किए। गर्मियों में मैं हल चलाने जाता। पाँच साल बाद मैं अन्ततः डॉक्टर बना!

कार्लोस मोंटेज़ूमा

एंग्लो- अमरीकी और यूरोप से आए प्रवासी परिवारों के लड़के कार्लोस की विरासत पर ताने मारते। जैन्टाइल हिंसा में विश्वास नहीं करते थे, पर उन्होंने कार्लोस को खुद की रक्षा करना सिखाया। कार्लोस का सबसे अच्छा सुरक्षा उपाय था पढ़ाई-लिखाई में उम्दा होना।

किशोर कार्लोस मोंटेज़ूमा

जब कार्लोस महज चौदह वर्ष के थे उन्हें शिकागो विश्वविद्यालय ने प्रवेश दे दिया। सतरह वर्ष की आयु में वहाँ से स्नातक बने। इसके साल भर बाद उन्होंने नॉर्थ-वेस्टर्न विश्वविद्यालय के शिकागो मेडिकल कॉलेज में प्रवेश किया। उन दिनों इतनी कम उम्र में इतना सब हासिल कर पाने वाले कम ही छात्र थे।

‘आह्वान’ मेरे परिवार का 1893 से 1899

“मैं चिकित्सक की तरह काम करते हुए अपने खोए हुए परिवार को भी तलाशने लगा। मुझे पता चला कि मेरी बहनों को छोटी उम्र में सोनोरा, मैक्सिको ले जाया गया था। समय के साथ दोनों का विवाह हुआ, और तब बच्चे भी हुए। पर मैं उनसे मिल पाता उसके पहले ही उनकी मौत हो चुकी थी। मैं उनके बच्चों को तलाश पाया और उनके साथ घनिष्ठ रिश्ते बनाए।

पर परिवार के दूसरे सदस्य? मेरे माता-पिता, मेरा नन्हा भाई? उस भयानक रात के तीस साल बाद मुझे सच्चाई का पता चला।

मेरे पिता उस रात शान्ति मिशन से वापस लौट रहे थे। उन्हें रास्ते में ही हमले और नरसंहार का पता चला। और भी गड़बड़ी होने की आशंका में वे सान कार्लोस स्थित रिज़र्वेशन में चले गए, जहाँ अमरीकी सेना ने उन्हें सुरक्षा उपलब्ध करवाने का वादा किया था।

मेरी माँ हमले के दौरान मेरे शिशु भाई को उठा सुरक्षा पाने के लिए भागी। मेरे भाई बहुत ही छोटा था। कुछ सप्ताहों बाद वह नन्हा ठण्ड से मारा गया। मेरी माँ किसी तरह सान कार्लोस के रिज़र्वेशन में पहुँची और पिता से मिल सकी।

हमले के कई महीनों बाद एक इन्डियन खोजी धावक ने मुझे मिस्टर जैन्टाइल के साथ सफ़र करते देखा। ख़बर मिलते ही मेरी माँ ने मुझसे मिलने का मन बनाया। यह करने के लिए उन्हें ऐरिज़ोना के सबसे मुश्किल और ख़तरनाक इलाकों में 150 मील का सफ़र करना था। पर माँ का दिल आसानी से डरता नहीं है। वे सेना के अधिकारियों के पास गईं ताकि रिजर्वेशन से बाहर जाने की अनुमति पा सकें। सेना ने साफ़ मना कर दिया। इसके बावजूद वे निकल पड़ीं। उनकी लाश कई दिनों बाद एक अपाची खोजी को मिली। उन्हें गोली मारी गई थी। उनकी मौत की ख़बर सुन मेरे पिता का दिल टूट गया। उनकी मौत सान कार्लोस रिज़र्वेशन में बुखार से इस घटना के कुछ वर्षों के बाद हुई।

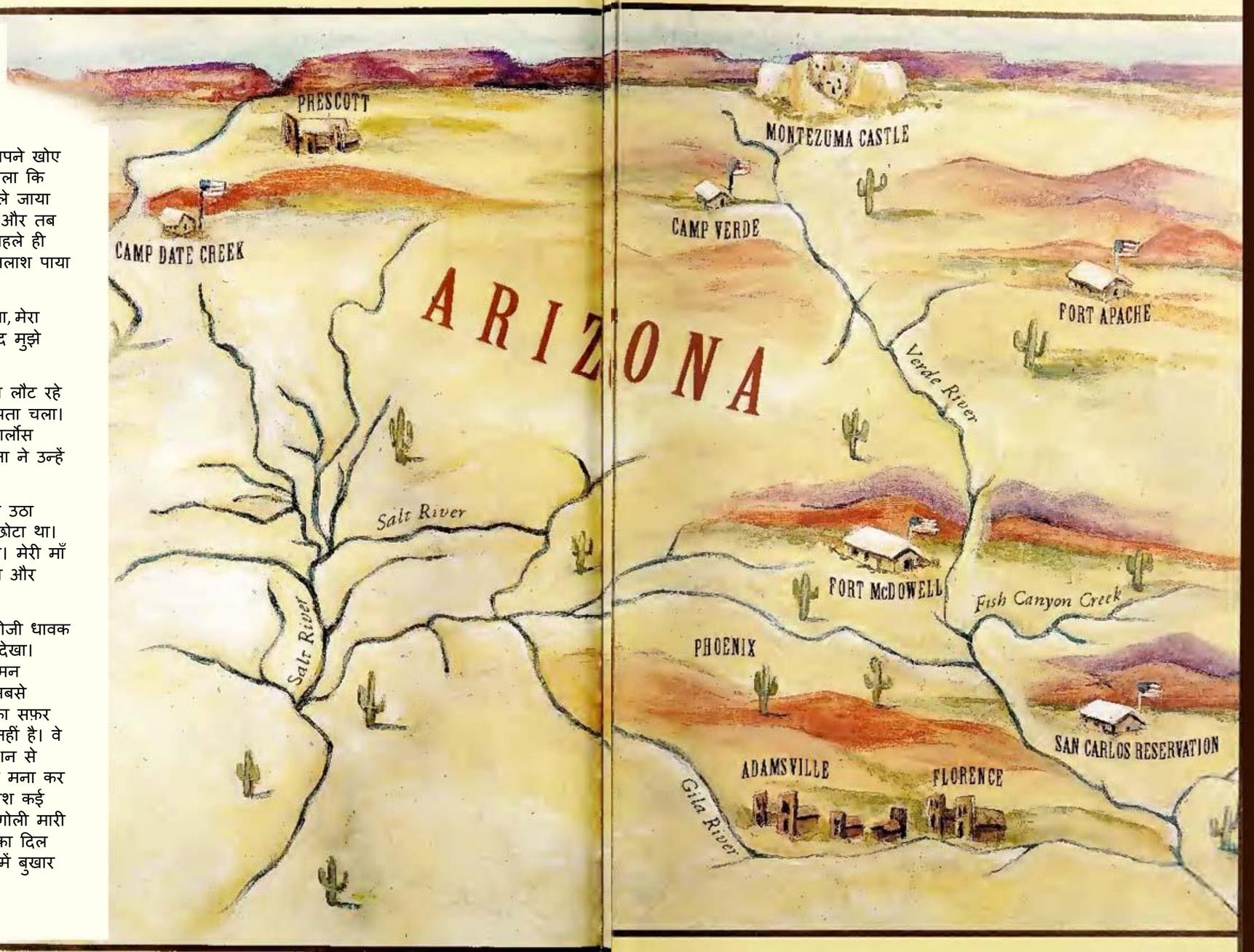

सान कार्लोस रिजर्वेशन

अमरीका के मूल निवासी कड़ाके की सर्दी और बर्फबारी के दौरान अपने झोले, बच्चों और कभी-कभी तो अपने बूढ़े माता-पिता को पीठ पर लादे पहाड़ पर चढ़े, उफनती नदियाँ पार कीं। वे सब अपने नज़दीकी रिजर्वेशन में पहुँचने की कोशिश कर रहे थे। इस सफ़र में उनमें से सैकड़ों मारे गए।

यावापाई सरदार

डेट क्रीक रिजर्वेशन, एरिज़ोना के यावापाई सरदार अबचीकाम्बा, जो सेना के कैद में रहते हुए अमरीकी सेना की वर्दी पहने हुए हैं। सेना ने रिजर्वेशन में आने वाले मूल निवासियों को भोजन और आवास का वादा किया था। पर ये वादे निभाए नहीं गए। रोग और इलाज अनुपलब्ध होने के कारण कई यावापाई लोगों की रिजर्वेशन में रहने के दौरान मौत हो गई।

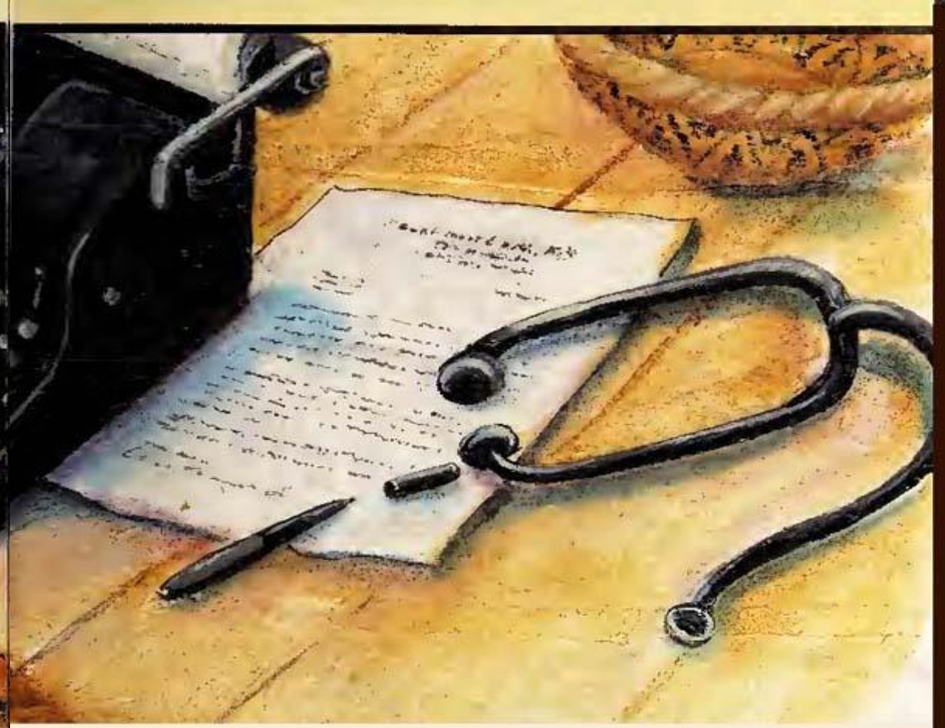

सान्तवना

1905

अब मैंने खुद को शिकागो में पाया। यहाँ मैं न केवल चिकित्सक के रूप में अपना पेशा करता हूँ, बल्की साथ ही कॉलेज ऑफ फिज़िशियन्स् एण्ड सर्जनस्, पोस्ट ग्रैज्युएट मेडिकल कॉलेज और मैडिकल कॉलेज ऑफ मेडिसिन में पढ़ा भी रहा हूँ।

पर दोस्त मैंने सब कुछ खोया नहीं है। जीवन के संघर्ष में अपने मित्रों की मदद और खुद के प्रयासों से मैं जीवन के अर्थ को महसूस कर सका हूँ।

इतने वर्षों बाद मेरे दिल ने आह्वान किया कि मैं अपने लोगों की मदद करूँ। सो मैं अब उनके लिए लिखता हूँ, काम करता हूँ। मैं हमेशा उनके हित के प्रति समर्पित रहूँगा।

भवदीय,

कार्लोस मोंटेज़ूमा एम. डी.

वसाजा, एक अमरीकी इन्डियन

डॉक्टर के रूप में कार्लोस मोंटेज़ूमा

मेडिकल कॉलेज से निकलने के कुछ ही महीनों बाद मोंटेज़ूमा ने रिजर्वेशन चिकित्सक के रूप में काम करना शुरू कर दिया। अपने लोगों के प्रति सरकार का नज़रिया उन्हें बड़ा ही अपमानजनक लगता था। एक समय जो स्वाभिमानी स्त्री और पुरुष थे, उनसे अब बच्चों जैसा बरताव किया जा रहा था। उनकी अंतरात्मा, उनकी संस्कृति की किसी को परवाह नहीं थी। डॉ. मोंटेज़ूमा ने अमरीकी सरकार की 'नेटिव अमरीकियों' सबंधी नीतियों को बदलने और ऑफिस ऑफ इन्डियन अफेयर्स को बन्द करवाने के लिए अथक मेहनत की। उन्होंने भाषण दिए 'वसाजा' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। यह पत्रिका अमरीका के मूल निवासियों के नागरिक अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित करती थी। इस दौरान वे लगातार शोध भी करते रहे और शिकागो के तीन मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाते भी रहे।

डॉ. मोंटेज़ूमा, सक्रियकर्मी

"मैं क्या पा सकता हूँ? यह सवाल किसी भी व्यक्ति के लिए घातक सवाल है ... इन्सान का असली सवाल, फिर चाहे वह व्यक्ति बहुत कुछ पाने की काबलियत क्यों न रखता हो, यह होना चाहिए, "मैं क्या दे सकता हूँ?"

- डॉ. कार्लोस मोंटेज़ूमा

डॉ. मोंटेज़ूमा की ज़िन्दगी के दौरान अमरीका के मूल निवासियों की दुनिया में क्रान्तिकारी बदलाव आया। 1860 के दशक में अमरीकी सेना ने मूल निवासियों का पूरी तरह दमन नहीं किया था। पर दस वर्षों के छोटे से अन्तराल में उन्हें जबरन उनकी जन्मभूमि से हटाया गया और रिज़र्वेशन में ठूंस दिया गया। उस वक़्त ये रिज़र्वेशन उनके घरों की बजाए कैदखाने अधिक थे। वहाँ लालच और कुप्रबंध का बोलबाला था। ऑफिस ऑफ इन्डियन अफेयर्स जो सभी रिजर्वेशनों का प्रबंध संभालता था उसमें ऐसे अधिकारी तैनात थे जो न केवल अमरीका के मूल निवासियों की संस्कृति से पूरी तरह अनभिज्ञ थे बल्की उनके विरुद्ध पूर्वधारणाओं से भरे हुए भी थे।

शहरी इलाकों में पले-बढ़े कार्लोस मोंटेज़ूमा रिज़र्वेशन में रहने वाले मूल निवासियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। वे सिर्फ़ अपने लोगों की मदद के लिए कुछ करना चाहते थे। उनके एक प्रभावशाली मित्र ने उनके मेडिकल कॉलेज से निकलने के कुछ ही महीनों बाद मोंटेज़ूमा की सिफ़ारिश की और उन्हें फोर्ट स्टीवनसन में चिकित्सक के रूप में काम मिल गया। वे जल्द ही रिज़र्वेशन में रह रहे लोगों के तकलीफ़देह स्थितियों के गवाह बने। इस अनुभव ने उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया।

वे इस निष्कर्ष पहुँचे कि जब तक कोई नाटकीय बदलाव नहीं लाया जाता अमरीका के मूल निवासियों का भविष्य अंधकारमय है। उन्होंने देखा कि रिज़र्वेशन के बाशिन्दे गंदगी और डर के साथ जी रहे हैं। डॉ. मोंटेज़ूमा का मानना था कि उन्हें भी उसी तरह आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए जैसा खुद उन्हें मिल सका था। ताकि वे भी अपने नए समाज में फूल-फल सकें। और यह तभी संभव था जब उन्हें शिक्षा और अमरीकी नागरिकता दी जाए। डॉ. मोंटेज़ूमा को लगा कि उन्हें अपने लोगों के लिए आशा का आदर्श बनना होगा। सो उन्होंने अपनी सुरक्षित सरकारी नौकरी छोड़ दी और स्वतंत्र रूप से काम करने लगे। अपने लोगों की भावी दुर्दशा ने डॉ. मोंटेज़ूमा को मजबूर किया कि वे ऑफिस ऑफ इन्डियन अफेयर्स को 'अनअमेरिकन' यानी अमेरिकी मूल्यों के विरुद्ध काम करने वाली, संस्था कहें। उनका सबसे मशहूर भाषण, जिसे अमरीका के सिनेट में पढ़ा गया, था "लैट माय पीपल गो..." (मेरे लोगों को मुक्त करो...)

"उनके वारिस होने के नाते...क्या हम तब भी रुक सकते हैं, सच्चाई से छिप सकते हैं, और इस समय मौन रह सकते हैं जब हम अपनी कौम के साथ दुर्व्यवहार होते, उनका दुरुपयोग होते और उन्हें विनाश की ओर धकेले जाते देख रहे हों? अगर ऐसा नहीं है तो आपमें जितनी भी जातीय वफ़ादारी और जातीय सम्मान हो वह जगे और 'मेरे लोगों को मुक्त करो' आन्दोलन में उजागर हो।

"मैं अपने लोगों की ओर से मोसेस की तरह कह रहा हूँ, संयुक्त राज्य अमरीका 'मेरे लोगों को मुक्त करो' !"

डॉ. मोंटेज़ूमा रिज़र्वेशन में रहने वाले इन्डियन नहीं थे। उन्होंने गोरों की 'दुनिया' में रहना चुना था। उन्होंने रुमानिया की एक महिला से शादी की थी। अपना चिकित्सा का काम शिकागो में किया था। ऐसा कर वे एंग्लो-अमेरिकन व अमरीका के मूल निवासियों, दोनों के ही सामने एक आदर्श रखना चाहते थे। पर उनके मुखर विरोध के कारण उनके कई दुश्मन बन गए थे। ऑफिस ऑफ इन्डियन अफेयर्स का प्रबंधन तो उन्हें उपद्रवी कहता था। फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने, जो उस वक़्त डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस कहलाता था, उन पर आरोप लगाया कि वे ऐसा साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं जो मूल निवासियों के मन में संयुक्त राज्य अमरीका के प्रति देशद्रोह की भावना जगाए। इस सबके बावजूद डॉ. मोंटेज़मा ने मूल निवासियों के साथ अमरीकी सरकार के बरताव का विरोध जारी रखा। वे अमरीका के मूल निवासियों की सबसे सशक्त आवाज़ बने।

अपने जीवन के आखिरी बारह वर्ष उन्होंने अपने लोगों के खुद की जन्मभूमि में रहने के अधिकार के लिए संघर्ष किया। अपनी मृत्यु तक वे सरकार पर दबाव बनाते रहे कि सरकार यावापाई लोगों के साथ पहले की गई संधियों की शर्तों को लागू करे।

डॉ. मोंटेज़ूमा ने अपना जीवन दूसरों की मदद करने को समर्पित किया था। पर जिस वक़्त उन्हें क्षय रोग (टी.बी.) हुआ, कोई उनकी मदद न कर सका। रोग निदान होने के बाद उन्होंने शिकागो छोड़ा और अपने बचपन की एरिज़ोना की पहाड़ियों में रहने चले गए।

जनवरी 1923 में डॉ. मोंटेज़ूमा का जीवन चक्र पूरा हुआ। उनकी देह एक 'आ-वाह' में पाई गई। वे सिर्फ़ एक लंगोट पहने थे। वे अपने अंत समय में फिर से और हमेशा के लिए वसाजा बन चुके थे।

डॉ. मोंटेज़ूमा की मृत्यु के सिर्फ़ साल भर बाद ही, कांग्रेस ने इन्डियन नागरिकता कानून, 1924 पारित किया, जिससे अमरीका के मूल निवासियों को संयुक्त राज्य अमरीका की नागरिकता मिल सकी।

पुस्तक सूची

जो अब आप पढेंगे वह स्पष्ट कर देगा कि मैंने डॉ. कार्लोस के जीवन को किस तरह गढ़ा और उसका कालक्रम तैयार किया। यह पुस्तक सूची उन प्रकाशनों की जानकारी उपलब्ध करवाएगी जिनका मैंने उपयोग किया। पुस्तक का अधिकतर भाग डॉ. मोंटेज़ूमा द्वारा प्रोफेसर होम्स को 1905 मे लिखे पत्र पर आधारित है। यह पत्र स्मिथसोनियन इन्स्टिट्यूट के एन्थ्रोपोलॉजिकल आर्काइव्स में संग्रहित हैं।

उनके बचपन की कहानी मैंने मुख्यतः लेखक एन.एम. क्लार्क को दिए उनके साक्षात्कारों से गढ़ी है। क्लार्क का लेख *डॉ. मोंटेज़ूमा: अपाची वॉरियर इन टू वर्ल्डस* अंततः मैगेज़ीन ऑफ वैस्टर्न हिस्ट्री में छपा था। उनके बाद के जीवन की सूचनाएं मुझे '*द पेपर्स ऑफ कार्लोस मोंटेज़ूमा*' से मिलीं। ये उन्नीस माइक्रो रीलें 'स्कालरली रिसोर्स' से प्राप्त हुईं, जो देश के विभिन्न स्थानों में संग्रहित हैं। मैंने जिस संस्करण का उपयोग किया वह लॉस एंजलीस स्थित म्यूज़ियम ऑफ द अमेरिकन इन्डियन में संग्रहित हैं। इन दस्तावेजों में जो सूचनाएं हैं वे उनकी पत्नी मारिया कैलर मोंटेज़ूमा मूर और उनके वक़ील जेम्स डब्लू. लैटिमर ने एकत्रित की थीं। इन आर्काइव्स में मोंटेज़ूमा के पत्र, पत्राचार, आलेख, भाषण, उनके स्व-प्रकाशित अख़बारों, पर्चों, और तो और ताम्बे की पाइपिंग के बिल तक संग्रहित हैं। उनका ऐतिहासिक भाषण *'लैट माय पीपल गो'* भी इसमें शामिल है।

इस पुस्तक की शोध में स्मिथसोनियन इन्सिटिट्यूशन के मानवशास्त्री सीज़र मरीनो की किताब *रिमार्केबल कार्लो जैन्टाइल: इटैलियन फोटाग्राफर ऑफ द अमेरिकन फ्रंटियर* से मदद मिली। मरीनो की क़िताब उनके आरंभिक जीवन, उनके संबंधों और कार्लो जैन्टाइल और कार्लोस मोंटेज़ूमा की तस्वीरें उपलब्ध करवाती है। उनके तिथिक्रम और जीवन व संबंधों की सूचनाएं, यावापाई इतिहासकार पीटर इवरसन की पुस्तक *कार्लोस मोंटेज़ूमा एण्ड द चेंजिग वर्ल्ड ऑफ अमेरिकन इन्डियन्स* से ली गई है। कई बारीक सूचनाओं का अतिरिक्त स्त्रोत लिओन स्पेराफ़ की पुस्तक *कार्लोस मोंटेज़ूमा: अ यावापाई अमेरिकन हीरो* से प्राप्त हई, जिसकी शोध ऐतिहासिक संदर्भ में की गई थी।